31

क्रूस के द्वारा पवित्र किए गए

1 कुरिन्थियों 1:26-31

''परन्तु अब पाप से स्वतन्त्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:22)।

मसीही लोगों का अस्तित्व पापियों को बचाने और चेले बनाने के लिए है (मत्ती 28:18-20)। परन्तु सुसमाचार का प्रचार जो किसी समय ''अन्दर'' था, अब ''बाहर'' हो गया है। अब कई लोग यह कहते हैं कि ''यदि किसी को लगता ही नहीं है कि वह खोया हुआ है तो उसे बचाया कैसे जा सकता है?''

समर्पण

पवित्र किया जाना कभी भी ''अन्दर'' नहीं रहा है। हम में से कइयों को पता भी नहीं है कि यह क्या है। ''पवित्र किया जाना'' का सीधा सा अर्थ परमेश्वर के इस्तेमाल के लिए ''अलग करना, समर्पित होना'' है। धर्म में इसका अर्थ ''पवित्र'' है। जैसा पतरस ने कहा, ''... क्योंकि लिखा है, 'पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं' '' (1 पतरस 1:15, 16)। हम धर्मी ठहराए बिना सही हो सकते हैं (मत्ती 6:1-18), परन्तु सही हुए बिना धर्मी नहीं बन सकते। पापियों के लिए उद्धार पाना आवश्यक है और उद्धार पाए हुओं के लिए पवित्र किया जाना आवश्यक है।

मसीही लोग उद्धार पाए हुए हैं (यानी उन्हें मुक्ति मिल गई है)। मसीही लोग उद्धार पा रहे (यानी पवित्र किए जा रहे) हैं। मसीही लोग उद्धार पाएंगे (महिमा पाएंगे)। उद्धार पाए हुओं के लिए पवित्र किया जाना आवश्यक है, न कि फिर से उद्धार पाना। परमेश्वर बिना उद्धार पाए लोगों को पवित्र नहीं करता।

हमें मुक्ति मसीह में होने के कारण मिली है। पर पवित्र किया जाना एक प्रक्रिया है। मुक्ति परमेश्वर की बात मानने से आती है, जबकि पवित्र किया जाना जीवनभर चलता रहता है। पौलुस ने लिखा, ''कोई अपने आप को धोखा न दे: यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने; कि ज्ञानी हो जाए'' (2 कुरिन्थियों 3:18; NKJV)।

हमें चाहिए कि उद्धार, पवित्र किए जाने और महिमा पाने को आपस में न उलझाए। हमें अवधारणाओं पर विचार करना सीखना आवश्यक है। बहुत सी धार्मिक उलझनें इन तीनों सच्चाइयों

को आपस में मिला देने के कारण आती हैं। उद्धार पुराने आलस के बाद होने वाला आरम्भिक दौर नहीं है।

विश्वास, न कि सिद्धता

क्या कोई सिद्ध हुए बिना मसीही बन सकता है? हां, क्योंकि मसीही सिद्ध नहीं है। लोग कहते हैं, ''मैंने कोशिश की परन्तु बात नहीं बनी जिस कारण मैंने छोड़ दिया।'' चरम धारणाओं को न समझ पाने के कारण आता है। ''एक बार उद्धार मिल गया तो सदा के लिए मिल गया'' गलत है। ''एक बार उद्धार पा लिया, तो कभी उद्धार नहीं पाया'' भी उतना ही गलत है! मसीही लोगों को पता होना आवश्यक है कि उनका उद्धार हुआ है (1 यूहन्ना 5:11-13)। हम सिद्ध नहीं बन सकते, जिस कारण हमारा विश्वास से उद्धार पाना आवश्यक है। हम सिद्ध नहीं हो सकते, परन्तु दिन भर में एक बार विश्वासी हो सकते हैं (रोमियों 3:10, 23)। विश्वास प्रेम के द्वारा कार्य करता है! (देखें इब्रानियों 11.) हम अपने आपका उद्धार स्वयं नहीं कर सकते इसलिए हमें उद्धार पाने के लिए यीशु पर भरोसा रखना आवश्यक है। विश्वास से हमारा उद्धार नहीं होता, बल्कि हमें विश्वास दिलाने वाला (यीशु) हमें बचाता है।

प्रतिदिन उसके प्रकाश में चलना

प्रकाश में चलने के बावजूद पवित्र लोग पाप करते हैं। पढ़ें 1 यूहन्ना 1:7-2:3. मसीह के लहू ने हमारा उद्धार किया है। इसलिए उसका ''वाचा का लहू'' हमें पवित्र भी करता है (देखें इब्रानियों 10:29)। पवित्र लोगों को पाप से लगातार धोया जाता है और उन्हें लगातार पवित्र किया जाता है।

मूसा को व्यवस्था का प्रबन्ध दिया गया था, परन्तु अब पवित्र लोग विश्वास के प्रबन्ध में रहते हैं। पृथ्वी पर सबसे व्यावहारिक बात विश्वास है। हम विश्वास से चलते हैं (सिद्धता से नहीं; 2 कुरिन्थियों 5:7)। ''धर्मी पुरुष विश्वास से जीवित रहेगा'' (देखें हबक्कूक 2:4; रोमियों 1:17; गलातियों 3:11; इब्रानियों 10:38)। आइए रुक कर विशेष ध्यान दें कि कब परमेश्वर वचन में अपनी बात को दोहराता है!

परेशान, ''परमेश्वर की कलीसिया जो कुरिन्थुस में है'' (1 कुरिन्थियों 1:2) को पवित्र किया गया था। दुष्ट पापियों के रूप में उन्होंने अपने पापों से मन फिराया था, और उनके पाप धोए गए थे (1 कुरिन्थियों 6:9-11)। वे उस समय ''पवित्र लोग'' बन गए थे और प्रतिदिन पवित्रता में बढ़ने लगे थे।

परमेश्वर (यूहन्ना 10:36; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23) और मसीह (1 कुरिन्थियों 1:30; इब्रानियों 2:11) पवित्र करते हैं। मसीह का ईश्वरीय बलिदान सदा-सदा के लिए एक ही बार दिया गया, पवित्र करने का आधार है (इब्रानियों 10:10, 14, 16-24, 29; देखें इब्रानियों 7-9)। सच्चाई (यूहन्ना 17:17, 19), ''परमेश्वर का वचन और प्रार्थना'' (1 तीमुथियुस 4:5) और पवित्र आत्मा पवित्र करते हैं (रोमियों 15:16; 1 परतस 1:2)। इस सबके अलावा विश्वास पवित्र करता है (प्रेरितों 26:18)।

निष्कर्ष क्या है? यीशु ने कुरिन्थियों को उनकी पहली स्थिति में पड़े रहने देने के लिए नहीं

बचाया। पवित्र लोगों का जीवन मन फिराव वाला होना आवश्यक है। परमेश्वर की सन्तान ''सिद्ध स्वर्गदूत'' न होने के बावजूद ''सन्त'' अर्थात पवित्र लोग हैं। मसीही व्यक्ति पवित्र किए जाने में बढ़ता है।

शिष्यता

पवित्र किया जाना शिष्यता अर्थात सीखकर मसीही जैसा बनने के लिए बढ़ने की प्रक्रिया है। हमारे अन्दर मसीह का मन होना (फिलिप्पियों 2:5-11) अपनी देहों को हर रोज़ मारना (1 कुरिन्थियों 9:23-27) और पुराने को उतार कर नये को पहनना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 5:17; इफिसियों 4:22-24)। हम यीशु के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते हैं (2 पतरस 3:18)। उसमें बढ़ने के द्वारा हमारे अन्दर यीशु का रूप लेने लगता है (गलातियों 4:19)। हमारा हर विचार उसकी इच्छा के अनुसार बन जाता है (2 कुरिन्थियों 10:5)।

आत्मिक संन्यास जैसी कोई बात नहीं है। परमेश्वर सन्तों या पवित्र लोगों से ही अपनी कलीसिया बनाता है। कोई भी अकेले ''आत्मिक योद्धा'' नहीं बन सकता। हम ''प्रेम, और भले कामों में उकसाने के लिए एक दूसरे की चिन्ता'' (इब्रानियों 10:24) करते हैं। हम सब देह के अंग हैं। कोई ''अकेला पहरेदार'' नहीं है। हम पीछे नहीं हटते बल्कि उसकी देह के रूप में सेवा करते हैं। हम अपना इनकार करते हैं और हर रोज़ अपने क्रूस को उठाते हैं (लूका 9:23-26)।

बीसवीं शताब्दी के थियोलॉजियन (धर्मशास्त्री) रेयनहोल्ड निबुहर ने लिखा है:

> करने के योग्य कोई काम जीवन के किसी भी समय में किया जा सकता है; इसलिए हमारा आशा से उद्धार पाना आवश्यक है ... इतिहास के निकट संदर्भ में कोई सम्पूर्ण अर्थ नहीं देता; इस कारण हमारा उद्धार विश्वास से होता है। परन्तु भलाई का हमारा कोई भी काम अकेले नहीं किया जा सकता; इस कारण हमारा उद्धार प्रेम से होता है।[1]

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]रेयनहोल्ड निबुहर, *दि आयरनी ऑफ़ अमेरिकन हिस्ट्री* (न्यू यार्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स संस, 1952), 63.